"मांगलिक दोष का शास्त्रीय सन्दर्भ"

डॉ. सुशील अग्रवाल

आर्ष ज्योतिषीय शास्त्रों में अनेक योगों और दोषों का वर्णन है जिनसे कुंडली मिलान और वैवाहिक जीवन के सुख-दुःख का फलादेश किया जाता है। उनमें से एक है "मांगलिक दोष" जो आधुनिक युग में अत्यन्त प्रचलित है। कुछ ज्योतिषी तो इस योग को शास्त्रीय सन्दर्भ रहित मानकर सिरे से नकार देते हैं और अन्य ज्योतिषी इस योग का आकलन करना अति महत्वपूर्ण मानते हैं।

इस लेख में "मांगलिक दोष" योग का शास्त्रीय सन्दर्भ खोजने का प्रयास किया गया है जिससे इस तथ्य का निर्धारण हो सके कि यह आधारहीन है या आधारसहित और फलित में इस दोष का क्या योगदान है।

1. साहित्यिक सन्दर्भ

1.1 संक्षिप्त नारद पुराण के पूर्व भाग, द्वितीय पाद, श्लोक 435–446 में विवाह के इक्कीस दोष बताये गये हैं। इनमें से छठा दोष है "भौम महादोष"। श्लोक 446 के अनुसार

कुजोऽष्टमो महादोषो लग्नादृष्टमगे कुजे।

शुभत्रययुतं लग्नं न त्यजेत्तुंगगो यदि

अर्थात् मंगल का लग्न से अष्टम भाव में होना महादोष है, परन्तु यदि मंगल उच्च का हो एवं तीन शुभ ग्रह लग्न में हों तो इस लग्न का त्याग नहीं करना चाहिये (अर्थात, ऐसी स्थिति में अष्टम मंगल–दोष का परिहार हो जाता है)। अतः नारद पुराण में केवल अष्टमस्थ मंगल को ही दोष माना गया है। विद्वानों के मतानुसार यह दोष स्त्रीजातक में अधिक लगता है क्योंकि स्त्रीजातक में अष्टम भाव मांगल्य भाव होता है।

1.2 जातक पारिजात के सप्तमादिभावत्रयफलाध्याय के श्लोक 34 के अनुसार

धनावसानस्मरयानरन्ध्रगो धरासुतो जन्मनि यस्य दारहा।

तथैव कन्याजनजन्मलग्नतो यदि क्षमसूनुरनिष्टदः पतेः।।

जन्मकुंडली में यदि भूमि पुत्र (मंगल) 2, 12, 4, 7, 8 भावों में हो तो पत्नी के लिए अशुभ है। यह योग यदि कन्या जातक की लग्न में हो तो पति के लिए अशुभ है।

श्लोक 36 के अनुसार

द्यूनकुटुम्बगतौ यदि पापौ दारवियोगजदुःखकरौ तौ।

तादृशयोग जदारयुत श्चेज्जीवाते पुत्रधनादियुतश्च।।

द्वितीय एवं सप्तम भावों में पाप ग्रहों की स्थिति से पत्नी से वियोग और दुःख होता है। परन्तु यदि पत्नी की कुंडली में भी द्वितीय एवं सप्तम भावों में पाप ग्रह हों तो जीवन पुत्र, धन आदि सहित (अर्थात् सुखी) होता है।

श्लोक 36 का योग नैसर्गिक पाप ग्रहों से बनता है, परन्तु श्लोक 34 में मंगल का विशेष वर्णन है और इसी को "मांगलिक दोष" कहा जाता है।

स्त्रीजातकाध्यायः श्लोक 28 के अनुसार –

कलत्रनाथस्थित भांशकेशयोः सितक्षपानायकयोर्बलीयसः।

दशागमे द्यूनपयुक्त मांशकत्रिकोणगे देवगुरौ करग्रहः।।

नवम भाव में कई शुभ ग्रह हों और सप्तम या अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो पति, धन, पुत्र व वैभव का सुख व पति के साथ दीर्घायु होती है।

द्वितीय एवं सप्तम भावों में पाप ग्रहों की स्थिति से पत्नी से वियोग और दुःख होता है। परन्तु यदि पत्नी की कुंडली में भी द्वितीय एवं सप्तम भावों में पाप ग्रह हों तो जीवन पुत्र, धन आदि सहित (अर्थात् सुखी) होता है।

1.3 अन्य सन्दर्भ : उपरोक्त वर्णित कुछ शास्त्रीय सन्दर्भ के अतिरिक्त मांगलिक दोष पर अनेकों लेख प्रकाशित हैं और बहुत सी मान्यताएं भी प्रचलित

हैं। जैसे– निम्न श्लोक लगभग हर आधुनिक लेख में मिलेगा परन्तु इसका मूल स्रोत अज्ञात है :

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे।

कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः ।।

श्री आर्यभट्ट–पंचांगम (2014–15, पृष्ठ 156) ने तो इस श्लोक के बारे में यहाँ तक कह दिया है कि यह श्लोक किसी ऋषि द्वारा लिखा प्रतीत नहीं होता क्योंकि वर को भर्तु की संज्ञा दी गयी है और भर्तु तो विवाह के पश्चात् कहना ही उचित होता है।

उपरोक्त वर्णन से यह कहा जा सकता है कि "मांगलिक दोष" निराधार नहीं है, परन्तु ग्रंथों में इसे इतने महत्व के साथ भी नहीं लिखा गया है। निष्कर्षतः फलित में मांगलिक दोष और परिहारों का ध्यान रखना चाहिए, परन्तु केवल इसी योग के आधार पर भी फलित करना तर्कसंगत नहीं है।

आइए, कुछ उदाहरण लेते हैं।

उदाहरण 1 : 24–जून–1971, 19:15 बजे, दिल्ली।

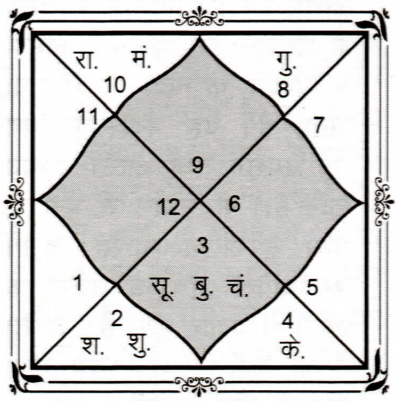

उपरोक्त कुंडली में मांगलिक दोष के साथ–साथ सप्तम पर तीन ग्रहों का प्रभाव है जिसमें से बुध स्वराशि, नवमेश सूर्य और अष्टमेश चन्द्र हैं। जातिका का विवाह हुआ और वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहा। विवाह के लगभग 20 वर्ष बाद तलाक हुआ।

उदाहरण 2 : 2–फरवरी–1963, 6:15 बजे, दिल्ली।

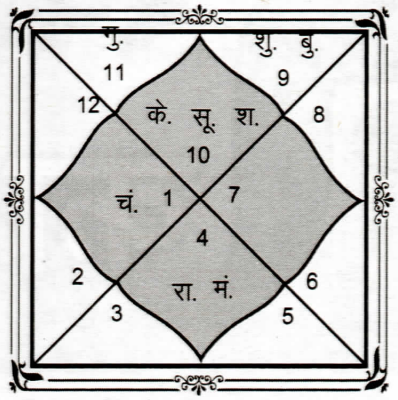

उपरोक्त कुंडली में मांगलिक दोष है, मंगल नीचराशिस्थ है और सप्तम राहु–केतु, सूर्य और शनि से पीड़ित भी है। भावेश चन्द्र की स्थिति कुछ ठीक है और कारक शुक्र भी ठीक है। अतः जातक का विवाह हुआ और वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहा। विवाह के काफी वर्षों के बाद तलाक हुआ।

उदाहरण 3 :

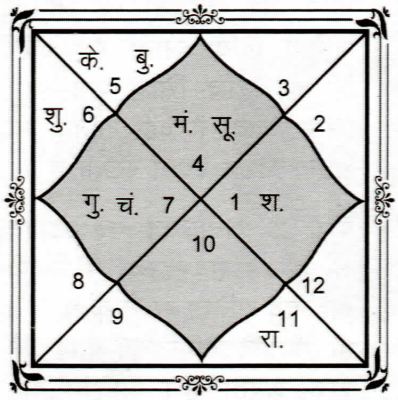

उपरोक्त कुंडली में मांगलिक दोष नहीं है, भावेश निर्बल और कारक शत्रु राशिस्थ। सप्तम पर भावेश शनि की दृष्टि भी है। अतः जातिका का विवाह हुआ, परन्तु वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण है।

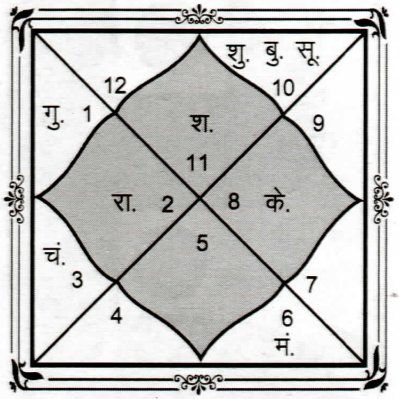

उदाहरण 4 : 12–फरवरी–1965, 07:30 बजे, आगरा, उत्तर प्रदेश।

उपरोक्त कुंडली में मांगलिक दोष है, परन्तु वैवाहिक जीवन प्रारंभिक कुछ वर्षों के मतभेद के अतिरिक्त सुखी है। शनि की दृष्टि सप्तम पर है जो लग्नेश होकर स्वराशिस्थ हैं। गुरु की दृष्टि भी सप्तम पर है और मित्र राशिस्थ हैं। भावेश एवं कारक शुक्र मिश्रित प्रभावित हैं। इस कुंडली पर मांगलिक दोष का विशेष प्रभाव देखने को नहीं मिला।

3. निष्कर्ष :

मांगलिक दोष के प्रभावों का आकलन करते समय फलित के सामान्य नियमों का आकलन भी आवश्यक है। दोनों के सामंजस्य से ही फलित करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक ज्योतिषीय ग्रन्थ के अनुसार सम्बन्धित भाव, भावेश, कारक, नवांश, दशा आदि का आकलन करना भी आवश्यक है।

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट्स,
सेक्टर–6, द्वारका, नयी दिल्ली
मो. 9810162371